Volume-9, Issue-1, Jan 2024 to June 2024
ISSN: 2348-473X

शिक्षा उपलब्धि और राजनीतिक सहभागिता के बीच अंतर्संबंध: बेगूसराय जिले में तुलनात्मक विश्लेषण

डॉ पंकज कुमार
प्रधानाध्यापक, उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय, भर्रा, बेगूसराय

सारांश

यह शोध-पत्र बेगूसराय जिले के संदर्भ में शिक्षा उपलब्धि और राजनीतिक सहभागिता के बीच अंतर्संबंध का जिला-केन्द्रित तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शिक्षा उपलब्धि को *वर्षों की स्कूली शिक्षा/उच्चतम कक्षा पूर्ण* तथा *कम-से-कम 10 वर्ष शिक्षा* जैसे मानकों से प्रचालित किया गया है। राजनीतिक सहभागिता को बहुआयामी रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें मतदान, स्थानीय बैठकों में भागीदारी, प्रतिनिधियों से संपर्क, अभियान सहभागिता, संगठन/समूह सदस्यता, तथा डिजिटल राजनीतिक सहभागिता शामिल हैं। अनुभवजन्य भाग में (i) 2014–2019 के बीच बेगूसराय संसदीय क्षेत्र में लिंगानुसार मतदान-प्रतिशत के तुलनीय आँकड़े, (ii) 2020 के लिए बेगूसराय का *महिलाओं में 10+ वर्ष शिक्षा* का जिला संकेतक, और (iii) 2020 विधानसभा चुनाव के चरण-2 में बेगूसराय जिले के विधानसभा क्षेत्रों का मध्याह्न मतदान-प्रतिशत (समय-खंड संकेतक) उपयोग में लिया गया है। जहाँ व्यक्ति-स्तरीय सूक्ष्म आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं, वहाँ बहुविविध प्रतिगमन को "क्रियान्वयन-योग्य डिज़ाइन" के रूप में प्रस्तुत किया गया है और किसी भी गुणांक का दावा नहीं किया गया है। निष्कर्ष यह दिखाते हैं कि बेगूसराय में मतदान के स्तर पर लिंगानुसार स्थायित्व/अस्थिरता के संकेत मिलते हैं, जबकि शिक्षा-आधार (विशेषतः महिलाओं में 10+ वर्ष शिक्षा) अपेक्षाकृत कमजोर है; इससे संकेत मिलता है कि शिक्षा का प्रभाव केवल मतदान तक सीमित न होकर, संभवतः *स्थानीय शासन सहभागिता, संपर्क, और डिजिटल भागीदारी* जैसे आयामों में अधिक निर्णायक हो सकता है। नीति-निहितार्थ बेगूसराय-विशिष्ट नागरिक शिक्षा, युवाओं की सहभागिता, महिला सहभागिता सहारा, मतदाता सूचना पहल, स्थानीय संस्थागत मंचों की प्रभावशीलता, तथा डिजिटल साक्षरता के सुदृढ़ीकरण पर केंद्रित हैं।

कूट शब्द: शिक्षा उपलब्धि; राजनीतिक सहभागिता; मतदान-प्रतिशत; बेगूसराय; लिंग-अंतर; स्थानीय शासन; काई-वर्ग परीक्षण; द्विआधारी प्रतिगमन; डिजिटल सहभागिता

परिचय

शिक्षा उपलब्धि और राजनीतिक सहभागिता के बीच संबंध राजनीतिक समाजविज्ञान में एक स्थापित विमर्श है। व्यापक रूप से यह माना जाता है कि शिक्षा राजनीतिक जानकारी समझने, सार्वजनिक प्रश्नों पर तर्क-संगत निर्णय लेने, तथा संस्थाओं से संवाद करने की क्षमता बढ़ाती है; यही क्षमता मतदान, प्रतिनिधियों से संपर्क, तथा स्थानीय बैठकों में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित कर सकती है [1], [2]। संसाधन और कौशल-आधारित दृष्टि यह भी जोड़ती है कि

शिक्षा "नागरिक कौशल" का निर्माण करती है, जो सहभागिता की लागत घटाकर सहभागिता को संभव बनाती है [1]।

फिर भी शिक्षा का प्रभाव एक-रेखीय और सर्वत्र समान नहीं होता। कई संदर्भों में संगठन-आधारित प्रेरण, स्थानीय नेटवर्क, और मतदान-दिवस लॉजिस्टिक जैसी स्थितियाँ सहभागिता के स्तर को शिक्षा से अलग भी संचालित करती हैं [3]। इसके अतिरिक्त, नागरिकता मानदंडों में परिवर्तन तथा नई किस्म की सहभागिता (विशेषतः डिजिटल माध्यमों से) शिक्षा-आधारित अंतर को बढ़ा या पुनर्संरचित कर सकती है [4], [5]।

इसी पृष्ठभूमि में यह शोध-पत्र बेगूसराय जिले पर केंद्रित होकर प्रश्न रखता है कि शिक्षा उपलब्धि (वर्षों की शिक्षा/उच्चतम कक्षा/10+ वर्ष शिक्षा) और राजनीतिक सहभागिता (मतदान तथा उसके परे अनेक आयाम) के बीच अंतर्संबंध किस प्रकार समझा जाए, और बेगूसराय के भीतर उप-समूहों (ग्रामीण बनाम शहरी, पुरुष बनाम महिला, तथा क्षेत्रीय क्लस्टर) के संदर्भ में यह संबंध किस तरह बदल सकता है। इस अध्ययन का अनुभवजन्य आधार विश्वसनीय निर्वाचन आँकड़े और जिला संकेतक हैं [6], [7], जबकि बहुविविध सांख्यिकीय आकलन को सूक्ष्म आँकड़ों की अनुपलब्धता के कारण "क्रियान्वयन-योग्य डिज़ाइन" के रूप में रखा गया है [8]।

बेगूसराय जिले में शिक्षा और सहभागिता का संदर्भ दो प्रकार के प्रामाणिक संकेतकों से निर्मित किया गया है। पहला, निर्वाचन-आधारित संकेतक जो मतदान को प्रत्यक्ष राजनीतिक सहभागिता के रूप में मापते हैं। दूसरा, जिला-प्रोफाइल संकेतक जो शिक्षा उपलब्धि का आधार बताते हैं और सहभागिता-चैनलों को प्रभावित करने वाले अंतर्निहित निर्धारकों की दिशा भी दिखाते हैं।

निर्वाचन आँकड़ों की दृष्टि से, बिहार के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा प्रकाशित 2014–2019 के तुलनीय मतदान-प्रतिशत दस्तावेज में बेगूसराय (संसदीय क्षेत्र संख्या 24) का लिंगानुसार मतदान-प्रतिशत स्पष्ट रूप से उपलब्ध है [6]। यही दस्तावेज 2014 और 2019 के बीच बेगूसराय में पुरुष/महिला मतदान के अंतर और परिवर्तन को एक ही पद्धति से दिखाता है, इसलिए यह समय-तुलना के लिए उपयोगी है [6]।

शिक्षा संदर्भ के लिए, जिला पोषण प्रोफाइल (बेगूसराय, बिहार) में "महिलाएँ जिनकी शिक्षा 10 या अधिक वर्ष" का जिला संकेतक उपलब्ध है, जो 2020 के आसपास के दौर में बेगूसराय के लिए 21% और बिहार के लिए 34% दर्शाता है [7]। यह संकेतक शिक्षा उपलब्धि को एक नीति-संगत सीमा (कम-से-कम माध्यमिक स्तर) पर पकड़ता है और राजनीतिक सहभागिता के उन आयामों से जुड़ सकता है जिनमें जानकारी, दस्तावेज़ीकरण, तथा संस्थागत संवाद अपेक्षाकृत अधिक है [1], [7]।

बेगूसराय के भीतर क्षेत्रीय विविधता को संकेतित करने के लिए बिहार विधानसभा चुनाव 2020 के चरण-2 में समय-खंड (मध्याह्न 1 बजे) मतदान-प्रतिशत की आधिकारिक सारणी उपयोग में ली गई है; इसमें बेगूसराय जिले के अंतर्गत आने वाले विधानसभा क्षेत्रों के समय-खंड मतदान-प्रतिशत दिए गए हैं [9]। यह "अंतिम मतदान-प्रतिशत" नहीं है, पर जिला के भीतर सहभागिता के स्थानिक पैटर्न का एक उपयोगी प्रॉक्सी देता है और यह संकेत करता है कि विश्लेषण में क्लस्टर-स्तरीय नियंत्रण आवश्यक है [8], [9]।

साहित्य समीक्षा

शिक्षा और सहभागिता के संबंध पर साहित्य तीन मुख्य व्याख्यात्मक रेखाओं में संगठित दिखता है। पहली रेखा संसाधन-आधारित है, जिसमें शिक्षा को समय-प्रबंधन, सूचना-प्रसंस्करण, और "नागरिक कौशल" का स्रोत माना जाता है; यह मतदान, बैठकों में भागीदारी, और संपर्क जैसे पारंपरिक सहभागिता रूपों को बढ़ा सकता है [1]। दूसरी रेखा सामाजिक स्थिति और नेटवर्क-आधारित है, जो शिक्षा को सामाजिक पूँजी और संगठनात्मक पहुँच के संकेतक के रूप में देखती है; इससे सहभागिता के अवसर बढ़ सकते हैं [2], [10]। तीसरी रेखा मानदंड-परिवर्तन और नई सहभागिता की है, जो बताती है कि नागरिकता मानदंडों में बदलाव के साथ सहभागिता के रूप भी बदलते हैं; डिजिटल माध्यमों से सहभागिता बढ़ सकती है, पर शिक्षा-आधारित डिजिटल अंतर इसे असमान भी बना सकता है [4], [5]।

भारत के संदर्भ में मतदान और सामाजिक समूहों की भागीदारी पर बड़े सर्वे-आधारित अध्ययनों ने दिखाया है कि मतदान कई बार पहचान-आधारित प्रेरण, स्थानीय संगठनों, और उम्मीदवार-प्रतिस्पर्धा जैसी स्थितियों से भी संचालित होता है; इसलिए शिक्षा का प्रभाव संदर्भ-निर्भर हो सकता है [11], [12]। इसके अतिरिक्त, वर्ग और चुनावी सहभागिता के संबंध पर हालिया विश्लेषण बताता है कि सहभागिता की व्याख्या में सामाजिक-आर्थिक स्थिति और संरचनात्मक कारक महत्वपूर्ण रहते हैं [13]। चुनावी सहभागिता के राजनीतिक-अर्थशास्त्र संबंधी अध्ययन यह रेखांकित करते हैं कि आय, रोजगार असुरक्षा, और क्षेत्रीय विकास जैसी स्थितियाँ मतदान के स्तर को प्रभावित कर सकती हैं, इसलिए शिक्षा का "स्वतंत्र प्रभाव" मापने के लिए नियंत्रित मॉडल आवश्यक है [14]।

डिजिटल माध्यमों से सहभागिता पर तुलनात्मक साहित्य यह बताता है कि शिक्षा नए प्रकार की सक्रियता (सूचना-साझाकरण, अभियान-समर्थन, सार्वजनिक प्रश्नों पर हस्तक्षेप) को सक्षम करती है; पर डिजिटल असमानता कुछ समूहों को पीछे भी छोड़ सकती है [5], [15]। भारत में युवाओं के मतदान और सहभागिता पर चुनाव अध्ययन-आधारित कार्य यह दिखाते हैं कि आयु-समूह, शिक्षा, और राजनीतिक रुचि/चर्चा का सम्मिलित प्रभाव सहभागिता को आकार देता है [16]। इसी बिंदु पर बेगूसराय जैसे जिले में शिक्षा उपलब्धि का स्तर और स्थानीय राजनीतिक-समाज संरचना मिलकर सहभागिता की प्रकृति तय कर सकती है।

वैचारिक ढांचा और परिकल्पना

इस अध्ययन का वैचारिक ढांचा एक स्पष्ट कारण-क्रम पर आधारित है। शिक्षा उपलब्धि राजनीतिक ज्ञान और मुद्दा-समझ बढ़ाती है, जिससे व्यक्ति की आंतरिक राजनीतिक प्रभावकारिता (यह विश्वास कि "मैं समझ सकता/सकती हूँ और असर डाल सकता/सकती हूँ") मजबूत होती है [1], [4]। शिक्षा संचार कौशल और संस्थागत भाषा-विन्यास को भी बेहतर करती है, जिससे प्रतिनिधियों से संपर्क और प्रशासनिक मंचों में भागीदारी सरल होती है [1], [10]। आगे चलकर यह नेटवर्क और संगठन सदस्यता के माध्यम से राजनीतिक सहभागिता को बढ़ा सकती है।

साथ ही, यह ढांचा यह मानकर चलता है कि कुछ भ्रमकारी कारक शिक्षा और सहभागिता दोनों पर प्रभाव डालते हैं। इनमें सामाजिक-आर्थिक स्थिति, आयु, लिंग, क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी), मीडिया/डिजिटल पहुँच, और स्थानीय संगठन-घनत्व शामिल हैं [13], [14], [15]। बेगूसराय में महिलाओं की 10+ वर्ष शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत कम होने का संकेत, लिंग × शिक्षा अंतःक्रिया की प्रासंगिकता बढ़ाता है [7]।

इसी आधार पर परीक्षण-योग्य परिकल्पनाएँ इस प्रकार रखी गई हैं। पहली परिकल्पना यह है कि शिक्षा उपलब्धि बढ़ने के साथ मतदान की संभावना और कम-से-कम एक गैर-मतदान सहभागिता (जैसे स्थानीय बैठक या प्रतिनिधि संपर्क) की संभावना बढ़ेगी, अन्य कारकों को नियंत्रित करने पर भी [1], [14]। दूसरी परिकल्पना यह है कि शिक्षा का प्रभाव महिलाओं में गैर-मतदान सहभागिता पर अपेक्षाकृत अधिक हो सकता है, क्योंकि शिक्षा उनके लिए सूचना और संस्थागत संवाद की बाधाएँ कम कर सकती है [7], [10]। तीसरी परिकल्पना यह है कि शहरी संदर्भ में शिक्षा का प्रभाव डिजिटल सहभागिता पर अधिक स्पष्ट होगा, जबकि ग्रामीण संदर्भ में शिक्षा का प्रभाव स्थानीय बैठकों/संपर्क पर अपेक्षाकृत अधिक दिख सकता है [15], [5]।

डेटा और प्रतिदर्शीकरण

यह अध्ययन मुख्यतः प्रामाणिक द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। पहला स्रोत बिहार के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी का 2014–2019 तुलनीय मतदान-प्रतिशत दस्तावेज है, जो बेगूसराय संसदीय क्षेत्र के लिए लिंगानुसार मतदान-प्रतिशत देता है [6]। दूसरा स्रोत भारत निर्वाचन आयोग का 2019 के संसदीय क्षेत्रों का विस्तृत मतदान-प्रतिशत दस्तावेज है, जिसमें बेगूसराय के लिए मतदाता संख्या, मतदाताओं की संख्या, तथा लिंगानुसार मतदान-प्रतिशत उपलब्ध है [17]। तीसरा स्रोत जिला पोषण प्रोफाइल (बेगूसराय) है, जिसमें महिलाओं की 10+ वर्ष शिक्षा का जिला संकेतक उपलब्ध है [7]। चौथा स्रोत बिहार विधानसभा चुनाव 2020 के चरण-2 का समय-खंड मतदान-प्रतिशत दस्तावेज है, जो बेगूसराय जिले के विधानसभा क्षेत्रों के मध्याह्न मतदान-प्रतिशत देता है [9]।

सूक्ष्म आँकड़ों के अभाव में यह शोध-पत्र एक “क्रियान्वयन-योग्य” नमूना-डिज़ाइन भी प्रस्तुत करता है। यदि भविष्य में सर्वे किया जाए, तो बेगूसराय के भीतर ग्रामीण/शहरी परत, लिंग, और आयु-समूह के आधार पर बहु-चरण स्तरीकृत नमूना उपयुक्त रहेगा, ताकि शिक्षा स्तरों (0–5, 6–9, 10–12, स्नातक+) और सहभागिता आयामों में पर्याप्त विविधता सुनिश्चित हो [8]। इस अध्ययन में कोई नया सर्वे-आँकड़ा निर्मित नहीं किया गया है।

चर और माप

शिक्षा उपलब्धि का प्रचालन तीन स्तरों पर किया गया है। पहला, *वर्षों की शिक्षा* या *उच्चतम कक्षा पूर्ण* का निरंतर माप। दूसरा, शिक्षा-स्तर श्रेणियाँ, प्राथमिक, मध्य, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, स्नातक और उससे ऊपर। तीसरा, जिला-स्तरीय प्रॉक्सी *महिलाएँ जिनकी शिक्षा 10 या अधिक वर्ष* (10+ वर्ष शिक्षा), जो बेगूसराय के लिए 21% दर्शाता है [7]।

राजनीतिक सहभागिता को बहुआयामी रखा गया है। द्वितीयक आँकड़ों के स्तर पर मतदान-प्रतिशत को प्रत्यक्ष सहभागिता माना गया है [6], [17]। सूक्ष्म-स्तरीय विश्लेषण के लिए

Volume-9, Issue-1, Jan 2024 to June 2024
ISSN: 2348-473X

सहभागिता के आयाम, मतदान, स्थानीय बैठक, प्रतिनिधि संपर्क, अभियान सहभागिता, संगठन/समूह सदस्यता, और डिजिटल सहभागिता, को जोड़कर एक समग्र सहभागिता सूचकांक प्रस्तावित किया गया है, ताकि शिक्षा के प्रभाव को केवल मतदान तक सीमित न करना पड़े [1], [5]।

तालिका 1: बेगूसराय संसदीय क्षेत्र, 2014 बनाम 2019 लिंगानुसार मतदान-प्रतिशत

वर्ष	पुरुष (%)	महिला (%)	कुल (%)	स्रोत
2014	57.46	64.23	60.61	बिहार मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी तुलनीय सारणी [6]
2019	57.84	67.10	62.63	बिहार मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी तुलनीय सारणी [6]

बेगूसराय (संसदीय क्षेत्र 24) की पंक्ति में 2014 और 2019 दोनों वर्षों के लिए लिंगानुसार और कुल मतदान-प्रतिशत एक ही दस्तावेज में दिए गए हैं [6]। यह तालिका दिखाती है कि 2014 से 2019 के बीच बेगूसराय में कुल मतदान-प्रतिशत 60.61 से 62.63 हुआ और महिला मतदान-प्रतिशत 64.23 से 67.10 तक बढ़ा [6]। शिक्षा–सहभागिता के दृष्टिकोण से यह संकेत देता है कि मतदान को केवल शिक्षा-स्तर से नहीं समझा जा सकता; स्थानीय प्रेरण, नेटवर्क, और चुनाव-विशिष्ट स्थितियाँ मतदान को बढ़ा भी सकती हैं [1], [3]।

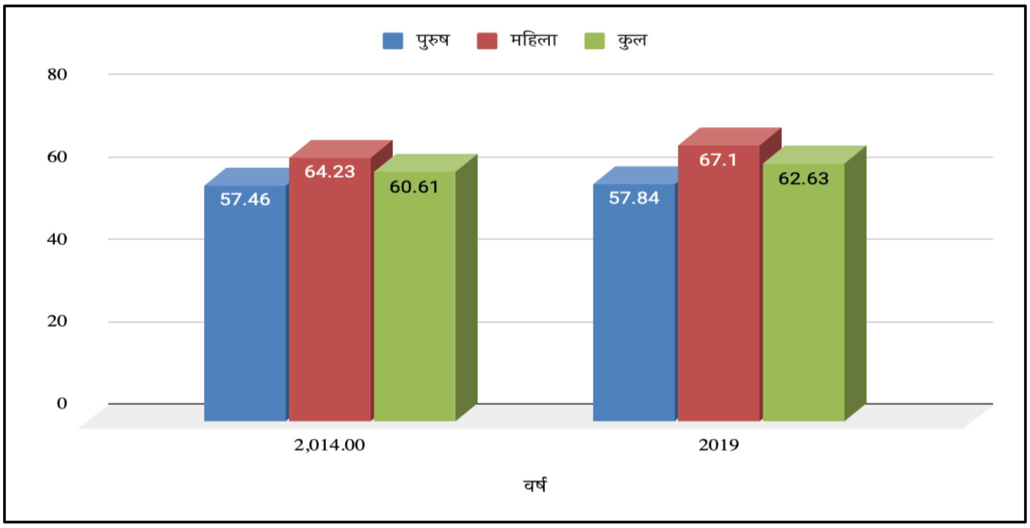

चित्र 1: बेगूसराय में लिंगानुसार मतदान-प्रतिशत: 2014 बनाम 2019।

यह आलेख दिखाता है कि बेगूसराय में 2019 में महिला मतदान-प्रतिशत पुरुषों से अधिक है और दोनों वर्षों में वृद्धि दिखाई देती है [6]। इसका अर्थ यह नहीं कि शिक्षा-स्तर अप्रासंगिक है;

बल्कि यह कि शिक्षा का प्रभाव संभवतः मतदान से अधिक, अन्य सहभागिता आयामों (स्थानीय बैठक, प्रतिनिधि संपर्क, डिजिटल सहभागिता) में अलग ढंग से प्रकट हो [1], [5]।

तालिका 2: बेगूसरराय संसदीय क्षेत्र, 2019 में मतदाता, मतदाताओं की संख्या और मतदान-प्रतिशत [17]

संकेतक	पुरुष	महिला	तृतीय लिंग	कुल
पंजीकृत मतदाता	1958382			1958382
मतदान करने वाले	603585	613828	3	1226503
मतदान-प्रतिशत (डाक मत)	57.84	67.10	4.84	62.63

यह तालिका बेगूसराय की पंक्ति से ली गई है, जहाँ मतदाताओं की संख्या, मतदान करने वाले मतदाता, और लिंगानुसार मतदान-प्रतिशत दिए गए हैं [17]। यह तालिका शिक्षा–सहभागिता संबंध के लिए दो बातें स्थापित करती है। पहली, मतदान का लिंग-ढांचा स्पष्ट है और महिला मतदान-प्रतिशत अधिक है [17]। दूसरी, यदि शिक्षा का प्रभाव समझना है तो मतदान के अतिरिक्त आयामों को मापना जरूरी है, क्योंकि मतदान का स्तर स्थानीय राजनीतिक प्रेरण और सामाजिक मानदंडों से भी प्रभावित होता है [3], [11]।

तालिका 3: बेगूसराय, महिलाओं में 10+ वर्ष शिक्षा का जिला संकेतक (2020) [7]

संकेतक	बेगूसराय	बिहार
महिलाएँ जिनकी शिक्षा 10 या अधिक वर्ष	21%	34%

यह संकेतक जिला पोषण प्रोफाइल के "अंतर्निहित निर्धारक" खंड में दिया गया है [7]। यह तालिका बताती है कि बेगूसराय में महिलाओं की माध्यमिक-स्तर और उससे ऊपर की शिक्षा उपलब्धि अपेक्षाकृत कम है [7]। ऐसे में शिक्षा का प्रभाव मतदान पर पूरी तरह न दिखे, फिर भी प्रतिनिधि संपर्क, स्थानीय बैठक में बोलना, और डिजिटल सहभागिता जैसे आयामों में शिक्षा-घाटा सहभागिता की गुणवत्ता और तीव्रता को सीमित कर सकता है [1], [5]।

तालिका 4: बिहार विधानसभा चुनाव 2020 (चरण-2), बेगूसराय जिले के विधानसभा क्षेत्रों का मध्याह्न (1 बजे) मतदान-प्रतिशत [9]

विधानसभा क्षेत्र	1 बजे मतदान-प्रतिशत
141 चेरिया बरियारपुर	34.54
142 बछवाड़ा	34.49
143 तेघड़ा	30.56

 Volume-9, Issue-1, Jan 2024 to June 2024
ISSN: 2348-473X

144 मटिहानी	36.51
145 साहेबपुर कमाल	43.39
146 बेगूसराय	31.87
147 बखरी (आरक्षित)	43.50

यह समय-खंड मतदान-प्रतिशत है, अंतिम मतदान-प्रतिशत नहीं; इसे केवल स्थानिक पैटर्न संकेतक के रूप में उपयोग किया गया है [9]। यह तालिका दिखाती है कि एक ही जिले के भीतर मतदान-गति (दिन के मध्य तक) में उल्लेखनीय भिन्नता है [9]। शिक्षा–सहभागिता संबंध की जाँच करते समय यह भिन्नता महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षा का प्रभाव स्थानीय संगठनात्मक प्रेरण, मतदान केन्द्रों की पहुँच, तथा क्षेत्रीय सामाजिक संरचना के साथ अंतःक्रिया कर सकता है; इसलिए बहुविविध मॉडल में क्लस्टर नियंत्रण आवश्यक होगा [8], [9]।

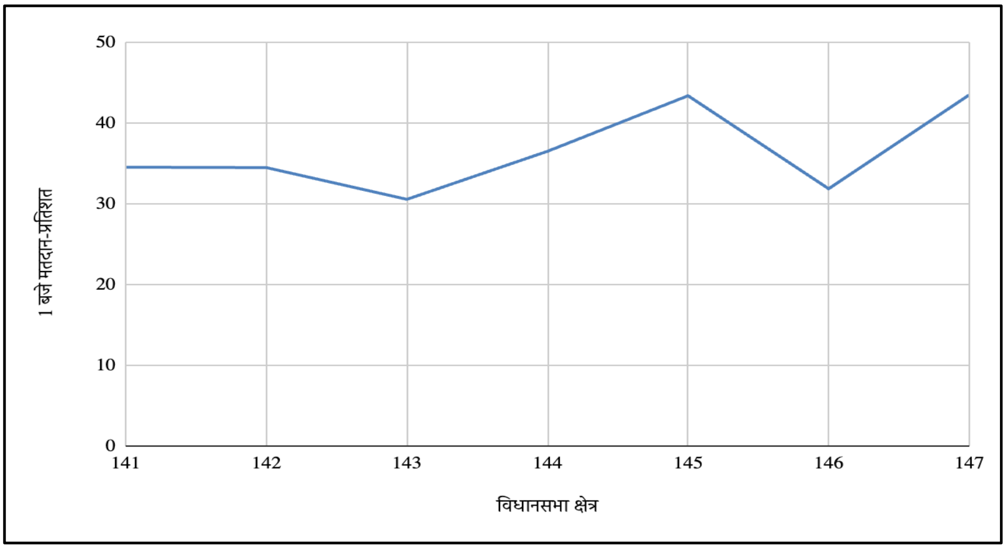

चित्र 2: बेगूसराय जिले में चरण-2 (2020) के दौरान 1 बजे तक मतदान-प्रतिशत: विधानसभा-वार।

बिहार विधानसभा चुनाव 2020, चरण-2, 1 बजे समय-खंड मतदान-प्रतिशत [9]। यह आलेख बताता है कि बेगूसराय जिले के भीतर मतदान-पैटर्न एकसमान नहीं है [9]। इस तथ्य से शिक्षा–सहभागिता विश्लेषण में "क्षेत्रीय क्लस्टर" की भूमिका बढ़ जाती है; शिक्षा का प्रभाव यदि है भी, तो वह क्षेत्र-विशिष्ट प्रेरण और अवसर संरचना के साथ मिलकर दिखाई देगा [8], [3]।

तालिका 5: राजनीतिक सहभागिता, बहुआयामी सूचकांक का मापन ढांचा

सहभागिता आयाम	मापन संकेतक	न्यूनतम मापन इकाई	साहित्य-संगति
मतदान	पिछले चुनाव में मत दिया	हाँ/नहीं	संसाधन व कौशल दृष्टि [1]
स्थानीय बैठक	ग्रामसभा/वार्ड बैठक में	आवृत्ति/भागी	संगठनात्मक पहुँच

 Volume-9, Issue-1, Jan 2024 to June 2024
ISSN: 2348-473X

	भागीदारी	दारी	[10]
प्रतिनिधि संपर्क	मुखिया/पार्षद/विधायक/सांसद से संपर्क	घटना-गणना	संस्थागत संवाद [1]
अभियान सहभागिता	प्रचार/सभा/स्वयंसेवा	हाँ/नहीं, तीव्रता	प्रेरण सिद्धांत [3]
समूह/संगठन	स्वयं सहायता समूह/युवा क्लब/समूह	सदस्यता/सक्रियता	सामाजिक पूँजी [10]
डिजिटल सहभागिता	राजनीतिक सामग्री पढ़ना/लिखना/साझा करना	आवृत्ति	डिजिटल सहभागिता [5]

यह तालिका बहुआयामी सहभागिता की अवधारणा को स्थापित साहित्य के अनुरूप संरचित करती है [1], [3], [5], [10]। इस तालिका का तात्पर्य यह है कि शिक्षा का प्रभाव मतदान पर सीमित दिखे, तब भी वह प्रतिनिधि संपर्क, स्थानीय बैठक, और डिजिटल सहभागिता जैसे आयामों में अधिक स्पष्ट हो सकता है [1], [5]। इसलिए बेगूसराय में शिक्षा–सहभागिता संबंध की ठोस जाँच के लिए बहुआयामी मापन आवश्यक है।

तालिका 6: अपेक्षित कारण-तंत्र और भ्रमकारी कारक, विश्लेषणात्मक मानचित्र

घटक	**तंत्र**	**अपेक्षित दिशा**	**समर्थन-साहित्य**
शिक्षा → ज्ञान/समझ	सूचना-प्रसंस्करण, मुद्दा-समझ	सकारात्मक	[1], [4]
शिक्षा → संस्थागत संवाद	लिखित/औपचारिक प्रक्रियाओं में सुविधा	सकारात्मक	[1]
शिक्षा → नेटवर्क	संगठन/समूह से जुड़ाव	सकारात्मक	[10]
वर्ग/आय	संसाधन बाधा/अवसर	संदर्भ-निर्भर	[13], [14]
डिजिटल पहुँच	डिजिटल सहभागिता संभव/असंभव	सकारात्मक	[5]
क्षेत्रीय क्लस्टर	प्रेरण/लॉजिस्टिक/स्थानीय राजनीति	संदर्भ-निर्भर	[3], [8]

यह मानचित्र शिक्षा–सहभागिता के कारण-तंत्र को संसाधन, मानदंड-परिवर्तन, तथा संरचनात्मक साहित्य से जोड़ता है। यह तालिका बताती है कि बेगूसराय में शिक्षा–सहभागिता संबंध का परीक्षण तभी सार्थक होगा जब आय, वर्ग, डिजिटल पहुँच, और क्षेत्रीय क्लस्टर जैसे भ्रमकारी कारकों को नियंत्रित किया जाए।

 Volume-9, Issue-1, Jan 2024 to June 2024
ISSN: 2348-473X

विश्लेषण प्रक्रिया

इस अध्ययन में विश्लेषण तीन चरणों में प्रस्तुत है। पहला चरण वर्णनात्मक तुलनात्मक विश्लेषण है, जिसमें 2014 और 2019 के बीच बेगूसराय में लिंगानुसार मतदान-प्रतिशत की तुलना की गई है [6] और 2019 के लिए मतदाता/मतदान करने वालों की संख्या तथा लिंगानुसार मतदान-प्रतिशत का उपयोग करके सहभागिता का ठोस आधार बनाया गया है [17]। दूसरा चरण क्रॉस-टैब और काई-वर्ग परीक्षण का है, जिसे सूक्ष्म आँकड़े उपलब्ध होने पर लागू किया जा सकता है। उदाहरणतः शिक्षा-स्तर श्रेणियों बनाम मतदान (हाँ/नहीं), या शिक्षा-स्तर बनाम स्थानीय बैठक सहभागिता (हाँ/नहीं) के लिए आवृत्ति तालिकाएँ बनाकर काई-वर्ग परीक्षण से सहसंबंध की सांख्यिकीय महत्ता जाँची जा सकती है [8]।

तीसरा चरण बहुविविध प्रतिगमन का है। यदि परिणाम-चर द्विआधारी हो (जैसे "मतदान किया/नहीं किया" या "स्थानीय बैठक में भाग लिया/नहीं लिया"), तो द्विआधारी प्रतिगमन (लॉजिट) उपयुक्त है। क्रियान्वयन-योग्य विनिर्देशन इस प्रकार रखा गया है:

व्यक्ति i के लिए,

सहभागिता$_i$ = फलन(शिक्षा$_i$, महिला$_i$, शिक्षा$_i$×महिला$_i$, नियंत्रण$_i$, क्लस्टर$_i$) [8]।

यहाँ नियंत्रण$_i$ में आय/वर्ग, आयु, ग्रामीण/शहरी, मीडिया/डिजिटल पहुँच, तथा संगठन सदस्यता शामिल हैं [13], [15]। क्लस्टर$_i$ में ब्लॉक/नगर वार्ड/विधानसभा क्षेत्र जैसी इकाइयों के स्थिर प्रभाव रखे गए हैं ताकि स्थानीय प्रेरण और अवसर संरचना का प्रभाव नियंत्रित हो [8]। दृढ़ता-जाँच के लिए (i) शिक्षा का मापन बदलना (वर्ष बनाम श्रेणी बनाम 10+ वर्ष सीमा), (ii) परिणाम-चर बदलना (मतदान, स्थानीय बैठक, प्रतिनिधि संपर्क, डिजिटल सहभागिता), और (iii) उप-नमूने बदलना (ग्रामीण/शहरी) सामिल है [5], [8]।

परिणाम

पहला प्रमुख परिणाम मतदान-आधारित सहभागिता में लिंगानुसार अंतर का है। बिहार मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी की तुलनीय सारणी के अनुसार बेगूसराय में 2014 में कुल मतदान-प्रतिशत 60.61 था, जो 2019 में 62.63 हो गया [6]। इसी अवधि में महिला मतदान-प्रतिशत 64.23 से बढ़कर 67.10 हुआ और पुरुष मतदान-प्रतिशत 57.46 से 57.84 हुआ [6]। यह निष्कर्ष यह दिखाता है कि बेगूसराय में चुनावी सहभागिता (मतदान के रूप में) 2019 में उच्च थी और विशेषतः महिलाओं में अधिक थी।

दूसरा परिणाम 2019 के विस्तृत निर्वाचन आँकड़ों से आता है। भारत निर्वाचन आयोग के संसदीय क्षेत्र-वार मतदान दस्तावेज के अनुसार बेगूसराय में 2019 में कुल 1958382 मतदाता थे, जिनमें मतदान करने वाले कुल 1226503 रहे; लिंगानुसार मतदान करने वालों में पुरुष 603585 और महिला 613828 दर्ज हैं, तथा डाक मत लिंगानुसार मतदान-प्रतिशत पुरुष 57.84 और महिला 67.10 है [17]। यह परिणाम सहभागिता को "केवल प्रतिशत" नहीं, बल्कि संख्या के रूप में भी ठोस बनाता है और आगे के सूक्ष्म-स्तरीय विश्लेषण के लिए आधार संकेतक देता है।

तीसरा परिणाम शिक्षा-आधार से संबंधित है। जिला पोषण प्रोफ़ाइल के अनुसार 2020 में बेगूसराय में "महिलाएँ जिनकी शिक्षा 10 या अधिक वर्ष" 21% है, जबकि बिहार के लिए वही 34% है [7]। यह अंतर संकेत देता है कि बेगूसराय में महिलाओं की माध्यमिक-स्तर शिक्षा उपलब्धि अपेक्षाकृत कमजोर है। यदि शिक्षा राजनीतिक ज्ञान और संस्थागत संवाद का साधन है, तो इसका असर मतदान से अधिक, प्रतिनिधि संपर्क, स्थानीय बैठकों में सक्रिय भागीदारी, और डिजिटल सहभागिता जैसी गतिविधियों पर अधिक पड़ने की संभावना बनती है [1], [5]।

चौथा परिणाम जिले के भीतर सहभागिता-पैटर्न की क्षेत्रीय विविधता का संकेत देता है। चरण-2 (2020) के समय-खंड मतदान-प्रतिशत में बेगूसराय जिले के विधानसभा क्षेत्रों में 1 बजे तक मतदान-प्रतिशत 30.56 से 43.50 के बीच दिखता है; उदाहरणतः तेघड़ा 30.56 और बखरी 43.50 है [9]। यह विविधता बताती है कि शिक्षा–सहभागिता विश्लेषण में क्षेत्रीय क्लस्टर और स्थानीय प्रेरण संरचना के नियंत्रण के बिना निष्कर्ष निकालना जोखिमपूर्ण होगा [8], [9]।

चर्चा

इन परिणामों से शिक्षा–सहभागिता संबंध की एक महत्वपूर्ण बात स्पष्ट होती है। बेगूसराय में महिलाओं की 10+ वर्ष शिक्षा का जिला संकेतक कम होने के बावजूद, 2019 में महिला मतदान-प्रतिशत उच्च है [7], [6]। इसका अर्थ यह नहीं कि शिक्षा का प्रभाव नहीं है, बल्कि यह कि मतदान-आधारित सहभागिता को स्थानीय प्रेरण, सामाजिक मानदंड, तथा चुनावी प्रतिस्पर्धा जैसी स्थितियाँ भी शक्तिशाली रूप से संचालित कर सकती हैं [3], [11]। इसलिए शिक्षा का प्रभाव मतदान में अपेक्षाकृत सीमित या छिपा हुआ रह सकता है, जबकि शिक्षा का वास्तविक प्रभाव उन सहभागिता रूपों में सामने आ सकता है जहाँ सूचना, तर्क-विन्यास, और संस्थागत संवाद की आवश्यकता अधिक है, जैसे प्रतिनिधि संपर्क, स्थानीय बैठक में बोलना, या डिजिटल माध्यमों से राजनीतिक भागीदारी [1], [5]।

इसके साथ ही, बेगूसराय के भीतर क्षेत्रीय विविधता (समय-खंड मतदान में) यह संकेत देती है कि सहभागिता अवसर-ढांचे में असमानता है [9]। यह असमानता शिक्षा के साथ अंतःक्रिया कर सकती है। उदाहरणतः जहाँ मतदान-केन्द्र तक पहुँच कठिन है या स्थानीय प्रेरण कमजोर है, वहाँ शिक्षा का प्रभाव भी कम प्रकट हो सकता है; जबकि जहाँ संगठनात्मक नेटवर्क मजबूत हैं, वहाँ कम शिक्षा वाले समूह भी मतदान में सक्रिय दिख सकते हैं [3], [8]।

भारत के चुनावी अध्ययन-आधारित साहित्य भी यही रेखांकित करता है कि सहभागिता के निर्धारकों में शिक्षा के साथ-साथ वर्ग, स्थानीय नेटवर्क, और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है [11], [13], [14]। इसीलिए यहाँ प्रस्तावित बहुविविध डिज़ाइन में शिक्षा के साथ नियंत्रण-चर और क्लस्टर नियंत्रण को अनिवार्य माना गया है [8]।

निष्कर्ष और नीतिगत निहितार्थ

यह शोध-पत्र बेगूसराय जिले में शिक्षा उपलब्धि और राजनीतिक सहभागिता के बीच संबंध पर दो स्पष्ट निष्कर्ष प्रस्तुत करता है। पहला, बेगूसराय में मतदान-आधारित सहभागिता (2019) लिंगानुसार असमान है और महिलाओं में अधिक है; 2014–2019 तुलनीय आँकड़ों तथा 2019 के विस्तृत निर्वाचन आँकड़ों से यह बात पुष्ट होती है। दूसरा, बेगूसराय में महिलाओं की 10+

वर्ष शिक्षा का स्तर 21% (बिहार 34%) होने का संकेत यह देता है कि शिक्षा-आधार कमजोर है; इसलिए शिक्षा का प्रभाव मतदान से अधिक, "सहभागिता की गुणवत्ता" और "सहभागिता के विविध रूपों" में खोजा जाना चाहिए।

नीति स्तर पर बेगूसराय-केंद्रित उपायों का केंद्र बिंदु यह होना चाहिए कि मतदान के साथ-साथ स्थानीय शासन मंचों में सक्रिय, सूचित और सतत भागीदारी बढ़े। नागरिक शिक्षा को माध्यमिक स्तर पर "स्थानीय शासन, मतदाता अधिकार, प्रतिनिधि उत्तरदायित्व, और शिकायत-प्रक्रिया" जैसे व्यावहारिक घटकों के साथ जोड़ना चाहिए, ताकि 10+ वर्ष शिक्षा की कमी से उत्पन्न सूचना बाधाएँ घटें। महिलाओं के लिए स्थानीय बैठकों में भागीदारी को सक्षम बनाने हेतु समय-संगत बैठकें, महिला समूहों के माध्यम से एजेंडा-निर्धारण, और सुरक्षित सार्वजनिक स्थानों की व्यवस्था जैसे उपाय सहभागिता के गैर-मतदान आयामों को बढ़ा सकते हैं।

युवाओं के लिए महाविद्यालय/प्रशिक्षण संस्थानों और स्थानीय समुदाय केंद्रों के माध्यम से मुद्दा-आधारित संवाद मंच बनाकर राजनीतिक चर्चा और तथ्य-आधारित सहभागिता को बढ़ाया जा सकता है; यह डिजिटल माध्यमों पर फैलने वाली अप्रामाणिक सूचना के जोखिम को भी घटाता है और डिजिटल सहभागिता को अधिक जिम्मेदार बनाता है। अंततः, प्रतिनिधि संपर्क और सेवा-प्राप्ति को सुगम बनाने के लिए "निर्वाचक सहायता डेस्क" और शिकायत-ट्रैकिंग जैसी संस्थागत व्यवस्थाएँ स्थानीय शासन सहभागिता को मतदान के पार ले जाकर नागरिक "आवाज़" को प्रभावी बनाती हैं।

अधिक ठोस कारणात्मक निष्कर्षों के लिए भविष्य में बेगूसराय में व्यक्ति-स्तरीय सर्वे/सूक्ष्म आँकड़ों पर प्रस्तावित काई-वर्ग परीक्षण और द्विआधारी प्रतिगमन डिज़ाइन लागू किया जाना चाहिए, जिसमें शिक्षा, लिंग, क्षेत्र, वर्ग/आय, डिजिटल पहुँच और क्लस्टर नियंत्रण एक साथ सम्मिलित हों।

संदर्भ

1. एस. वर्बा, के. एल. श्लोज़मैन, और एच. ई. ब्रेडी, *आवाज़ और समानता: नागरिक स्वैच्छिकता और लोकतांत्रिक भागीदारी*, हार्वर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 1995, पृष्ठ 601–640
2. एस. एम. लिपसेट, *राजनीतिक मानव: राजनीति के सामाजिक आधार*, जॉन्स हॉपकिंस विश्वविद्यालय प्रेस, 1981, पृष्ठ - 586
3. पी. एफ. लाज़र्सफ़ेल्ड, बी. बेरेल्सन, और एच. गॉडेट, *जनता का चुनाव: मतदाता निर्णय की प्रक्रिया*, कोलंबिया विश्वविद्यालय प्रेस, 1948, पृष्ठ - 178
4. आर. जे. डाल्टन, "नागरिकता मानदंड और राजनीतिक सहभागिता का विस्तार," *पॉलिटिकल स्टडीज़*, 2008, पृष्ठ 76–98
5. पी. नॉरिस, *लोकतांत्रिक पुनर्जागरण: राजनीतिक सक्रियता का पुनराविष्कार*, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, 2002, पृष्ठ 3

6. बिहार मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, "लोकसभा 2014–2019 में बिहार का तुलनीय मतदान-प्रतिशत (संसदीय क्षेत्र-वार, लिंगानुसार)," आधिकारिक दस्तावेज (बेगूसराय, संसदीय क्षेत्र 24), 2019.
7. नीति आयोग/अंतरराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान, "जिला पोषण प्रोफाइल: बेगूसराय, बिहार," 2022 (अंतर्निहित निर्धारक खंड में 'महिलाएँ जिनकी शिक्षा 10 या अधिक वर्ष'), 2020 संकेतक.
8. ए. गेलमैन और जे. हिल, *प्रतिगमन तथा बहु-स्तरीय/अनुक्रमिक प्रतिमान द्वारा आँकड़ा विश्लेषण*, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, 2007, पृष्ठ 79–105
9. बिहार मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, "बिहार विधानसभा चुनाव 2020: चरण-2 (03.11.2020) 1 बजे समय-खंड मतदान-प्रतिशत (विधानसभा क्षेत्र-वार)," आधिकारिक दस्तावेज (बेगूसराय जिले के विधानसभा क्षेत्रों सहित).
10. आर. डी. पुटनम, *लोकतंत्र का अकेलापन: सामाजिक पूँजी का क्षय और नागरिक जीवन*, 2000 (सामाजिक पूँजी और सहभागिता).
11. लोकनीति–विकासशील समाज अध्ययन केंद्र, "राष्ट्रीय निर्वाचन अध्ययन: भारत में चुनावी व्यवहार और नागरिक दृष्टियाँ," परियोजना-पृष्ठ, 1996–वर्तमान.
12. वाई. पालशिकर, एस. कुमार, और एस. लोधा (सम्पा.), *समकालीन भारत में चुनाव और लोकतंत्र* (चुनावी सहभागिता पर अध्याय), ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, विभिन्न संस्करण.
13. डी. वैद, "भारत में वर्ग और चुनावी सहभागिता का मानचित्रण: मतदान और दल-समर्थन के संबंध," *जर्नल ऑफ इंडियन पॉलिटिक्स एंड पॉलिसी*, 2023, पृष्ठ 225–257
14. एस. पांडा, "चुनावी सहभागिता के राजनीतिक-अर्थशास्त्रीय निर्धारक," *एशियन अफेयर्स* (पत्रिका लेख), 2019.
15. पी. एन. हॉवर्ड और एम. हुसैन, *डिजिटल माध्यम और लोकतांत्रिक सक्रियता*, ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 2013, पृष्ठ 160
16. वी. अत्री और जे. मिश्रा, "2019 लोकसभा चुनाव में युवा मत," लोकनीति–विकासशील समाज अध्ययन केंद्र से संबंधित अध्ययन-पत्र, 2020, पृष्ठ 87–107
17. भारत निर्वाचन आयोग, "2019 लोकसभा चुनाव: संसदीय क्षेत्र-वार मतदाता, मतदान करने वाले, और लिंगानुसार मतदान-प्रतिशत," आधिकारिक सारणी (बेगूसराय पंक्ति सहित), पृष्ठ 4